

मोरंगे

मार्च-अप्रैल, 2026



अनुक्रम

गीत कविताएँ

बाजरा की रोटी

बादल

मोटर आई

दरिया

गाँव को जीम्बो

मोटा भालू

कहानियाँ

हाथी और भालू

शेर और बकरी

झाड़ू और पौछा

टोपीबाज

याद की धूप छाँव में

ये क्या हो गया

चोर सब ले गए

बात लै चीत लै

किसान और चाँद का टुकड़ा

मंत्री की खोज

गुड़ की आदत

सम्पादन : राजेश कुमावत

डिज़ाइन : लोकेश राठौर

वितरण : अंकुश शर्मा

आवरण चित्र : किस्मत बैरवा, कक्षा-5,
उदय पाठशाला कटार

वर्ष 17 अंक 189-190

प्रबंधन

विष्णु गोपाल

निदेशक

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता

मोरंगे

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

एच-1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,

मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान

322001



‘मोरंगे’ का प्रकाशन ‘यात्रा फाउण्डेशन’
आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो
रहा है।

गीत कविताएँ

बाजरा की रोटी

बाजरा का आटा

आटे की रोटी

गुड़िया खाकर

हो गई मोटी

चला न जाये

ले ली स्कूटी

सुबह को गई

रात को लौटी

बोली, किस्मत हो गई खोटी।

चाँद नायक, समूह-हरियाली, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार



खुशबू बैरवा, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर पालीघाट

बादल

धड़ धड़ धड़ धड़ बादल गरजे

टप टप टप टप पानी बरसे

झींगर बोले तूं तूं तूं

मेंडक उछले छम छम छम।

विक्रम नायक, समूह-सूरज, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।



रीना सैनी, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर खवा

मोटर आई

पों-पों करती मोटर आई
टिक-टिक करता तांगा आया
गाड़ी खींचता बैल
ट्रक सामान उठाकर लाया
ट्रेक्टर जोते खेत
तेज दौड़ती बस जब जाती
पीछे उड़ती रेत।

आरूषी गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



विष्णु नायक, फ़ैलो, फोरम थियेटर टीम

दरिया

मैं गई थी फरिया, वहाँ था एक दरिया
दरिया में था पानी, पानी में था कमल
कमल की पंखुड़ियाँ थी नरम
उस पर बैठा था भँवरा करन
करन था नटखट, तोड़ दिया कमल
कमल को देखकर रोया चरन।

ममता जागा, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



मंजू नायक, फैलो, फोरम थियेटर टीम

गाँव को जिम्बो

जिम्बा को न्योतो आयो
चालो सारा जिम्बा
गोरा विमला तू भी चाल
और काड़या तू भी चाल
गरमा गर्म पूड़ी सब्जी
और साथ में मिठाई भी
सुनकर मुँह में पानी आये
दौड़ लगाकर भागे सारे।

मनीषा बैरवा, ब्लॉक सहायक, उदय किरण कार्यक्रम कटार।



मोटा भालू

मोटा भालू था वो चालू
खाता खूब मिठाई
खा खाकर हो गया आलू
सारे जंगल में लगता न्यारा
नहीं करता कोई काम
खाता दिनभर मीठे आम।

पूनम गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

आस्था वर्मा, शेरपुर



सुहाना, कक्षा-9, उमंग सेंटर रांवल

कहानियाँ

हाथी और भालू

एक बार की बात है। एक भालू और एक हाथी आपस में दोस्त थे। एक दिन भालू शहद की तलाश में जंगल में घूम रहा था, लेकिन उसको दूर-दूर तक कहीं भी शहद नहीं मिला। कुछ दूर चलने के बाद उसको बबूल के पेड़ पर मधुमक्खी का एक छत्ता दिखाई दिया। छत्ता बहुत ऊँचाई पर था, भालू शहद नहीं खा पाया। फिर वह अपने दोस्त हाथी को बुलाकर लाया। अपने दोस्त की सहायता से भालू ने शहद तोड़ा और दोनों दोस्तों ने मिलकर खूब शहद खाया। दोनों बहुत खुश हुए और वापस जंगल की ओर चले गये।

मोहित बैरवा, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।



गोलू गुर्जर, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल

शेर और बकरी

एक जंगल में एक बकरी रहा करती थी। वह रोजाना पेड़ों से फल तोड़कर खाती थी और खुशी-खुशी रहती थी। एक दिन शेर का छोटा सा बच्चा उसके पास आया। वह बहुत छोटा था। वह अपनी माँ को ढूँढता हुआ वहाँ आ गया था। बकरी ने शेर के बच्चे से पूछा, तुम यहाँ क्यों आए हो? और तुम्हारी माँ कहाँ है? शेर का बच्चा बोला कि, मैं यहाँ खो गया हूँ और मेरी माँ कहीं नहीं मिल रही है। यह सुनकर बकरी को दया आई और बोली, तुम मेरे साथ चलो, हम दोनों मिलकर तुम्हारी माँ को ढूँढते हैं। शेर का बच्चा और बकरी दोनों ही उसे ढूँढने चले गए किन्तु उन्हें शेर की माँ कहीं नहीं मिली। वे दोनों थक हारकर पेड़ के नीचे बैठ गए। तभी बकरी बोली, तुम मेरे साथ मेरे घर पर चलो जब तुम्हारी माँ मिलेगी तब तुम उनके साथ चले जाना। शेर का बच्चा मान गया और वह बकरी के साथ रहने लगा। धीरे-धीरे समय गुजरता रहा और शेर का बच्चा बड़ा हो गया साथ ही बकरी भी बूढ़ी हो गई। एक दिन एक शेर उनके घर के आगे से निकला, वह बूढ़ा था और वह अपने बेटे को ढूँढता हुआ वहाँ आया था। तभी उसकी नजर शेर और बकरी की तरफ गई। बूढ़े शेर ने देखा कि शेर के गले पर एक चोट का निशान है। वह समझ गया कि वह शेर उसका ही बेटा है। क्योंकि बचपन से ही शेर के गले पर वह निशान था। बूढ़ा शेर अपने बेटे और बकरी को पूरी बात बताता है। यह सब सुनकर वे तीनों खुशी-खुशी साथ रहने लगे।

सोमन गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



करिष्मा बैरवा, कक्षा-6, उदय पाठशाला कटार

झाड़ू और पौछा

एक गाँव में दो लड़के रहते थे। दोनों साथ-साथ रहते थे। एक का नाम झाड़ू और दूसरे का नाम पौछा था। उनके बीच कभी झगड़ा नहीं होता था। एक दिन दोनों जंगल में घूमने गये। चलते-चलते उन्हें एक मछली जमीन पर पड़ी हुई दिखी। झाड़ू और पौछा ने देखा कि मछली की सांसें चल रही थी। उन दोनों ने मछली को हाथ में उठाया और नदी में जाकर डाल दिया। मछली को नदी में डालते ही वह नाचने लगी। मछली को देखकर झाड़ू और पौछा खुश हुए। वह दोनों वहाँ से चलने वाले ही थे कि मछली ने उछलकर उन दोनों को धन्यवाद कहा।

राधिका प्रजापत, कक्षा-4, उदय किरण कार्यक्रम सेंटर हिम्मतपुरा।



शिवांशी सैनी, कक्षा-6, उदय पाठशाला कटार

टोपीबाज

एक बार एक लड़का टोपी की दुकान पर गया। वहाँ से उसने एक टोपी खरीदी और वहाँ से अपने घर के लिए चल दिया। शहर से गाँव काफी दूर था। वह अकेला ही पैदल-पैदल हंसते-गाते जा रहा था। गाँव के नजदीक जाते-जाते उसे रात हो गई थी। गाँव के आस-पास का इलाका जंगल था। अचानक बहुत जोर से आंधी आई और उसकी टोपी हवा में उड़ गई। उसने तेज और धूल भरी हवाओं को चीरते हुए टोपी को आँखों से औझल नहीं होने दिया। वह उसे पाने के लिए उसी बीहड़ भरे जंगल में टोपी को पकड़ने के लिए भागता रहा। तभी अचानक उसे कुछ लोगों की आवाज सुनाई दी। उसने चुपके से उनकी बात सुनी और देखा कि वे चोरी के सामानों का बटवारा कर रहे थे। उसे शक हुआ कि लगातार हमारे गाँवों में जो चोरियाँ हुई हैं निश्चित रूप से ये वही चोर हैं। जिनकी वजह से लोगों की रातों की नींद उड़ी हुई है। लड़के ने होशियारी दिखाते हुए चुपके से अपने गाँव के लोगों को फोन कर दिया। वह उन चोरों की निगरानी करता रहा। थोड़ी देर में गाँव के लोग लाठी-डंडे लेकर उसी जगह पर पहुँच गए और चोरों को पकड़ लिया। गाँव से अभी चोरी करके लाये वो सामान उन्हें मिल गया। गाँव वालों ने पुलिस को भी वहीं बुलाया और चोरों को उनके हवाले कर दिया। चोरों से पुलिस ने अब तक की गई चोरी का सामान लोगों को लौटा दिया। इससे सभी लोग उस लड़के से खुश हुए और उसका नाम रख दिया टोपीबाज।

रवि नायक, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।



राकेश बंजारा, फैलो, नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावण्डाखुर्द



अनुष्का गुर्जर, कक्षा-1, उदय किरण फ़ैलोशिप सेंटर बाढ़पुर



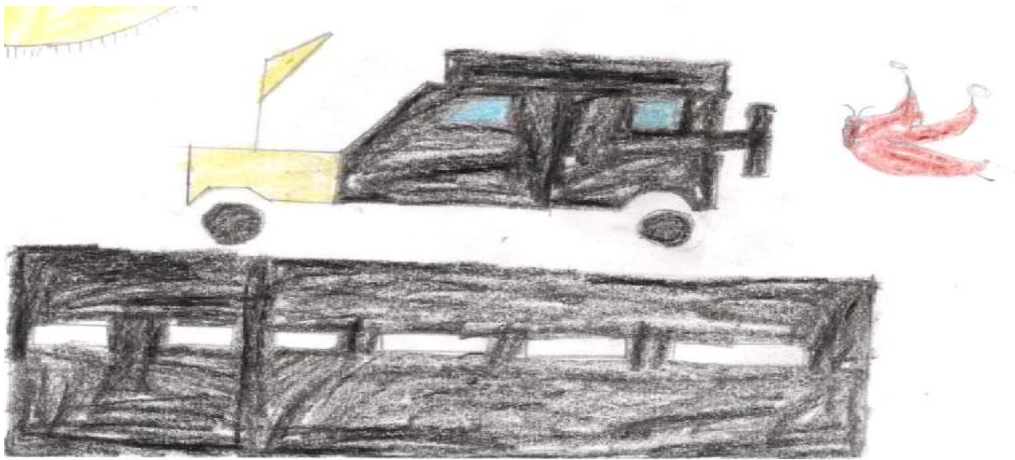
पायल सैनी, कक्षा-7, रा.उ.प्रा.वि. जमूलखेड़ा

याद की धूप छाँव में

ये क्या हो गया

बहुत पुरानी बात है। जब हम टोंक फुटबॉल प्रतियोगिता में जाने वाले थे। उससे पहले हम रोज स्कूल में खेलने आते थे। हम सब बेसब्री से प्रतियोगिता का इंतजार कर रहे थे। एक-एक दिन गिन रहे थे। खेलने में भी काफी मेहनत कर रहे थे। हमारा इंतजार खत्म हुआ और जाने का दिन भी आ गया। हम एक दिन पहले से ही काफी अच्छी तैयारी कर रहे थे। चाहे खेल की हो या सामान ले जाने की हो। शाम के समय शिक्षक ने मुझे और मेरे साथी को बॉल के साथ दौड़ लगवाई। हम दोनों तेज भाग रहे थे। जब मैं तेज भाग रहा था, तभी दूसरा साथी मेरे से टकरा गया। उसका सिर मेरे सिर से टकराया। मुझे टक्कर लगते ही चक्कर आ गए और मैं नीचे गिर गया। थोड़ी देर तो मुझे कोई होश नहीं आया। फिर जब चेहरे पर पानी के छीटें मारे तो मैं उठा। मैंने तो सोचा कि सिर्फ मेरे ही जोर की लगी है, दूसरे साथी के तो कुछ नहीं हुआ लेकिन दूसरे साथी को देखकर तो मैं घबरा ही गया। उसका तो पूरा चेहरा खून से लाल हो रहा था। उसकी टी शर्ट भी खून से सनी हुई थी। उसके पापा और हमारे शिक्षक उसे हॉस्पिटल लेकर गए। उसका इलाज करवाया गया। प्रतियोगिता से एक दिन पहले ये क्या हो गया। मैं बहुत दुःखी था कि इतनी मेहनत की और मेरा दोस्त खेल नहीं पाया।

केशव गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



सूरज नायक, कक्षा-3, उदय पाठशाला कटार

सब चोर ले गए

गर्मियों की बात है। शादी विवाह का माहौल चल रहा था। हमारे घर में भी मेरी बुआ की शादी थी। कुछ ही दिन शेष थे। हम भी पूरी तैयारी कर रहे थे। घर में प्रत्येक सदस्य ने नए कपड़े और जूते खरीद लिए थे। हमने सोचा कि ये नए कपड़े और जूते शादी के दिन ही पहनेंगे। अभी पहनेंगे तो पुराने हो जायेंगे। इसलिए हम सबने नए कपड़े और जूते बक्से में रख दिए और ताला लगा दिया। हर वो कीमती चीज हम बक्से में ही रखते थे। उसमें और चीजें रखी थी। हमने सोचा अब हमारी सब चीजें सुरक्षित हैं। हम रात को बाहर ही सोते थे, क्योंकि कमरे में बहुत गर्मी लगती थी। नए मकान का कार्य चल रहा था। शादी का एक ही दिन शेष रह गया था। हम नए कपड़े और जूते पहनने के लिए बेसब्री से सुबह होने का इंतजार करने लगे। आखिरकार सुबह हो ही गई। मेरी मम्मी ने कमरे का दरवाजा खोला और खोलते ही जोर से चिल्लाई। हम सब दौड़कर गए। हमने सोचा कि कोई सांप या बिच्छू आ गया। मेरे पापा लाठी लेकर गए और मैं छोटा सा डंडा लेकर। लेकिन जैसे ही हमने देखा हमारे पैरों तले से जमीन खिसक गई। दृश्य ऐसा था कि बक्सा खुला हुआ था। सारा सामान बिखरा हुआ था। मेरी नजर जल्दी से मेरे कपड़ों और जूतों को ढूंढने लगी। खूब ढूंढा पर नजर नहीं आए। पता चला कि चोर सारे सामान, नए कपड़े, जूते, गहने सब ले गए। मेरा नए कपड़े पहनने का सपना आखिर सपना ही रह गया। मैंने पुराने कपड़ों में ही शादी में शिरकत की।

आरूषि, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



कृष्णा बैरवा, कक्षा-4, उदय पाठशाला कटार

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. ऐसी कौनसी चीज है जो धूप में भी नहीं सूखती है?
2. एक अंधा व्यक्ति क्या नहीं देख सकता?
3. पानी का है मेरा चोला, सफेद हूँ आलू का गोला?
4. एक कमरे में चार सौ आदमी थे, उसमें से दो सौ गये कितने बचे?
5. ऐसी कौनसी चीज है, जिसे कोई चुरा नहीं सकते?
6. एक गुफा के दो रखवाले, दोनों लम्बे दोनों काले, बताओ क्या है?

अंजली प्रजापत, कक्षा-5, उदय किरण कार्यक्रम हिम्मतपुरा सेंटर

चुटकले

- 1 टीचर (पप्पू से) – पांच में से पांच घटाने पर कितने बचेंगे?

पप्पू – पता नहीं मैडम।

टीचर – अगर तुम्हारे पास 5 भटूरे हैं और मैं 5 भटूरे तुमसे ले लूँ तो तुम्हारे पास क्या बचेगा?

पप्पू – छोले।

- 2 टीचर – बताओ वो कौनसा जानवर है जो उड़ता भी है और तैरता भी है?

छात्र – मैडम वो है ... मरा हुआ मच्छर।

मोनिका गुर्जर, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

बात लै चीत लै

किसान और चाँद का टुकड़ा

बहुत पुरानी बात है। एक गाँव में हरिया नाम का किसान रहता था। उसके खेत में कभी फसल नहीं होती थी। सबके खेत हरे-भरे हैं पर उसका सूखा। एक रात वो खेत में बैठा सो रहा था। तभी आसमान से एक छोटा सा चाँद का टुकड़ा टूटकर उसके खेत में गिर गया। टुकड़ा बोला, “हरिया तू क्यों रोता है? हरिया बोला, “मेरे खेत में कुछ नहीं उगता, बच्चे भूखे हैं।”

चाँद का टुकड़ा बोला, “मुझे अपने हल के आगे बाँध देना। मैं जहाँ-जहाँ जाऊँगा वहाँ सोना उगेगा। पर एक शर्त है किसी को बताना मत की मैं चाँद का टुकड़ा हूँ। वरना मैं वापस चला जाऊँगा।” हरिया मान गया। अगले दिन उसने टुकड़े को हल में बाँध दिया। वह हल जहाँ-जहाँ चला वहाँ गेहूँ की जगह सोने की बालियाँ उग आईं। हरिया मालामाल हो गया। गाँव वालों को शक हुआ। सब पूछते, “हरिया ये चमत्कार कैसे हुआ? पर वो चुप रहता।

एक दिन गाँव के ठाकुर ने दावत रखी। शराब पिलाकर हरिया से पूछा तो नशे में हरिया ने बोल दिया कि, “मेरे पास चाँद का एक टुकड़ा है।” बस उसी रात चाँद का टुकड़ा आसमान में उड़ गया। सुबह खेत फिर से सूखा था। सोने की बालियाँ भी मिट्टी बन गईं। हरिया फिर गरीब हो गया पर अब वो रोया नहीं। उसने कहा, चाँद ने इतने दिन भूख से बचाया। अब मेहनत से कमाऊँगा। फिर वो दिन-रात मेहनत करने लगा। कुछ सालों में अपने दम पर उसका खेत सबसे हरा-भरा हो गया।

सुनी हुई कथा – ‘पुनर्लेखन’ बृजेश कुमार, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार ।

मंत्री की खोज

एक बार एक किसान था। वह बहुत गरीब था। वह अकेला था। इसी गाँव में एक राजा था। उसे एक मंत्री की जरूरत थी। उसने बहुत ढूँढा, पर कोई भी योग्य आदमी नहीं मिला। उसे ईमानदार और इंसानियत से भरा हुआ व्यक्ति चाहिए था। उसने एक योजना बनाई। वह अपना वेश बदलकर राज्य में घूमा, पर उसे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला। वह बहुत भूखा था।

उसने व्यक्तियों से मदद मांगी पर किसी ने भी उसकी मदद नहीं की। अंत में वह उस झौपड़ी में पहुँचा जहाँ वह गरीब किसान रहता था। राजा ने उससे रोटी मांगी पर किसान के पास तो एक ही रोटी थी। किसान ने तुरंत वह रोटी राजा को दे दी। राजा ने पूछा कि यदि मैं यह रोटी खा लूँगा तो तुम क्या खाओगे?

किसान ने कहा, “आप तो हमारे मेहमान हो, पहले आप खाओ। राजा उससे बहुत खुश हुआ। राजा किसान को लेकर राजदरबार में पहुँचा और उसे अपना मंत्री बना दिया। किसान बहुत खुश हुआ।

राजेन्द्र गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

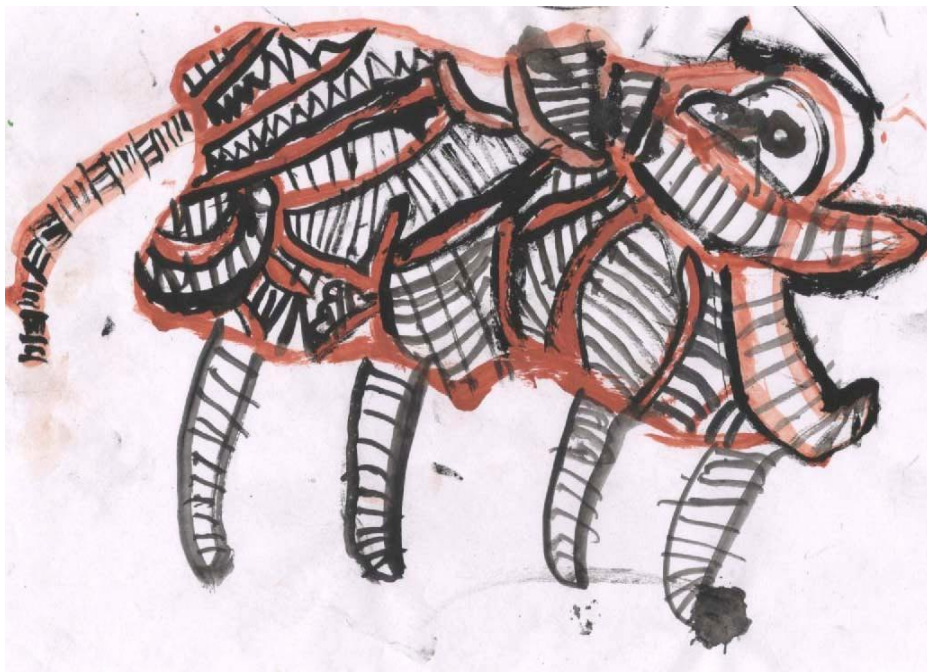


रोहित बैरवा, कक्षा-5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बैरना

गुड़ की आदत

एक बार एक महापुरुष अपने आश्रम में बैठे थे। एक दिन उनके पास एक महिला अपने बेटे को लेकर आई और महापुरुष से उसने कहा, “मेरा बेटा गुड़ बहुत खाता है, इसे गुड़ खाने के लिए मना कर दीजिए।” महापुरुष ने कुछ सोचकर कहा, “अगले रविवार को आना।” यह सुनकर महिला अपने बच्चे को लेकर घर चली गई। महिला अगले रविवार को पुनः आई। लेकिन महापुरुषने दोबारा वही बात दोहराई कि अगले रविवार को आना। इस बार महिला को गुस्सा आ गया मगर कर भी क्या सकती थी? अगले रविवार को आने से पहले उसने सोच लिया कि महापुरुष ने कोई उपाय नहीं बताया तो उनहें खरी-खोटी सुनाऊंगी। फिर वह उनके पास गई तो उन्होंने उनके बेटे से कहा, कि अब गुड़ मत खाना। यह सुनकर महिला को गुस्सा आ गया और महापुरुष से कहा, “इतना ही कहना था तो इतने दिन क्यों लगाए? महापुरुष ने कहा कि, मैं स्वयं गुड़ खाने की आदत छोड़ रहा था तब जाकर मैं बच्चे को गुड़ खाने के लिए मना कर पाया।

कीर्ति महावर, कक्षा-9, उमंग शिक्षण केन्द्र कुण्डेरा (गाँव में सुनी हुई कहानी का लेखन)



हिमांशु बैरवा, कक्षा-5, उदय किरण फैलोशिप सांवलपुर

1. परीक्षा
2. अक्षर
3. ओला
4. चार सौ
5. डान
6. मछ

परीक्षा के जवाब



गारुड गायत्री, 2020 20

अंजली मीना, कक्षा-9, उमंग शिक्षण केन्द्र रावल